बजरंगियों का फूलों के बजाय.....

पेज एक का शेष

इस तरह की झड़पें मेवात के करीब तीन-चार क्षेत्रों में हुईं, बंदूकें दोनों ओर से चलीं जिसमें दो होमगार्ड सहित पांच लोगों के मरने की खबर है, घायल होने वालों का तो कोई हिसाब नहीं। इस तरह के माहौल में अपराधियों का सक्रिय होना भी कोई नई बात नहीं है सो मेवात के सक्रिय अपराधियों ने भी इस मौके का लाभ उठाने का प्रयास किया। उन्होंने थाना साइबर में घुस कर खूब लूटपाट की। बारातियों द्वारा लाए गए वाहनों को भी अग्नि के सुपुर्द कर दिया गया। लूटपाट करने वालों ने भी मौके का पूरा लाभ उठाया।

अपनी साजिश में असफल सरकार ने मेवातियों को सबक सिखाने के लिए अपना दमन चक्र पूरी ताकत से चला दिया है। अनेकों छोटी-मोटी दुकानों के अलावा कुछ बड़ी दुकानों को धराशायी करने में खट्टर सरकार ने कोई संकोच नहीं किया, पुश्तैनी जमीनों पर बने मकानों को अतिक्रमण बता कर ढहा दिया गया, जबकि अतिक्रमण को ढहाने का भी प्रावधान देश के कानून में मौजूद है। जितने भी मुकदमे मेवात में दर्ज किए गए हैं उनमें दूर-दूर से हमला करने आए हमलावरों को मुल्ज़िम न बना कर उन स्थानीय मेवातियों को मुलज़िम बनाया गया है जिन्होंने आत्मरक्षा में उन गुंडों का मुकाबला किया था। इन्हीं पर वाहन फूकने का आरोप भी लगाया गया है लेकिन यह जानने का प्रयास कोई नहीं कर रहा कि जले हुए वाहन दूर-दूर से वहां करने क्या आए थे?

स्थानीय स्तर पर धार्मिक पूजा अर्चना तो यहां के मंदिरों में पहले भी होती रही है, उसी पूजा के उद्देश्य से अनेकों असली श्रद्धालु महिलाएं व बच्चे भी वहां आए हुए थे लेकिन उन्हें इस बात का ज्ञान नहीं था कि इस बार संघी गुंडे क्या खेल खेलेंगे। इस खेल में बेशक कुछ महिलाओं व बच्चों को असुविधा ज़रूर हुई लेकिन किसी भी मेवाती ने उन महिलाओं को छुआ तक नहीं। इस बात की पुष्टि नलहड़ स्थित उस मंदिर के पुजारी करते हैं जिसमें हजारों की संख्या में श्रद्धालु शरण लिए हुए थे। दरअसल, संघी गुंडे इन श्रद्धालुओं को ही ढाल बना कर अपनी लड़ाई लड़ रहे थे। इन श्रद्धालुओं में गुड़गांव की एक महिला मजिस्ट्रेट भी फंसी हुई थी जिन्हें मेवातियों ने सुरक्षित निकाल कर घर पहुंचवा दिया था। मौके पर पहुंची पुलिस ने भी तमाम श्रद्धालुओं को सुरक्षित बाहर निकाल दिया था, लेकिन संघी गुंडे इतने डरे हुए थे कि वे बाहर निकलने से भी घबरा रहे थे। वे प्राण रक्षा के लिए वायु मार्ग से निकलना चाहते थे और बार बार पुलिस और फौज बुलाने की मांग करते रहे।

भरोसेमंद सूत्र बताते हैं कि मेवात के पुलिस अधीक्षक बिजारणिया गांव दर गांव जाकर लोगों से कह रहे हैं कि वे आरोपी लड़कों को पेश कर दें तो अच्छा रहेगा वरना हम तो पकड़ ही लेंगे। जवाब में लोग उन्हें कहते हैं कि आप नाम बताइए किस किस को पेश करना है हम कर देंगे? अब एसपी साहब के पास कोई नाम हो तो बताएं, नाम तो कोई है नहीं। पुलिस का जाना माना तरीका यही है कि किसी को पकड़ लो और फिर उसका नाम लिख दो।

मेवात में हिंदू-मुसलमान .....

पेज एक का शेष

के लिए अप्लाई किया तो मेरा स्थानांतरण राजकीय प्राथमिक पाठशाला नांगल मुबारकपुर से राजकीय प्राथमिक पाठशाला जरगाली में हो गया। जरगाली भी बड़ा अच्छा गांव है वहां पर भी मैंने अच्छी मेहनत की, क्योंकि वहां पर टीचरलैस स्कूल था, मिडिल स्कूल था वहां पर भी मैंने छठी, सातवीं और आठवीं तीनों कक्षाओं क बच्चों को सारे सब्जेक्ट पढ़ाए, प्राइमरी में भी अपना काम किया। पढ़ाई के साथ-साथ अन्य एक्टिविटी व जो भी गैर शैक्षणिक कार्य होते थे उनमें भी बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया।

उससे पहले सन 2014 में मुझे जिला नूंह का असिस्टेंट प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर (एपीसी) के पद पर कार्य करने का मौका मिला, मुझे मास्टर ट्रेनर बनने का मौका मिला। मैंने मेवात में 85 परसेंट स्कूल विजिट किए और मेवात के अधिकतर स्कूलों में क्वालिटी इंप्रूवमेंट प्रोग्राम के प्रशिक्षण दिए। तभी से मेरी एक पहचान बन गई, आज मुझे मेवात ही नहीं बल्कि पूरे एजुकेशन डिपार्टमेंट के अधिकतर लोग मेरे नाम और काम से जानते हैं। अभी मैं किसी के पास बैठ कर कहता हूं कि मेरा ट्रांसफर हिसार हो गया है शायद अगले महीने में चला जाऊं तो वो लोग सिर्फ एक ही बात कहते हैं कि गुरु जी आप मत जाना, चाहे हमें चंडीगढ़ जाना पड़ जाए आप हमें यह बताएं कि आपका ट्रांसफर कैसे रुकेगा। शायद यहां के लोगों को मैं भा गया हूं और यह लोग मुझे भा गए हैं। मैंने यहीं पर जमीन लेकर अपना मकान बना लिया है और मेरी तीन बेटियां हैं। मेरी सबसे बड़ी बेटी अब दसवीं क्लास में पढ़ रही है और बॉक्सिंग में स्टेट चैंपियन है, नेशनल में सिलेक्शन हो रखा है। मेरी दूसरी बेटी फोर्थ क्लास में है जो योगा करती है, बहुत अच्छे योगा करती है, मेरी तीसरी बेटी अभी 4 साल की है जो ऑलराउंडर है।

मेवात में किसी भी तरह का कोई भी भेदभाव नहीं है हिंदू-मुस्लिम सभी मिलकर के त्यौहार मनाते हैं, हंसी खुशी एक दूसरे से भाईचारे की भावना से रहते हैं। हम ईद को इनकी खीर और सेवइयां खाते हैं और दिवाली को हम इनको मिठाई खिलाते हैं। अब लॉकडाउन जो चला हुआ है इस लॉकडाउन के दौरान भी मैं यहीं पर अपनी सेवाएं दे रहा हूं शायद ही मेवात जैसा इलाका, मेवात जैसे भोले भाले आदमी, मेवात जैसी इज्जत कहीं और मिल पाएगी मैंने 16 साल में सिर्फ और सिर्फ यही ऑब्जर्व किया है की अगर इंसान खुद सही है तो सामने वाला बिल्कुल सही है। यहां पर जो इज्जत और मान सम्मान मिल रहा है शायद ही कहीं और मिल पाएगा, क्योंकि किसी के भी घर परिवार में कोई शादी हो,फंक्शन हो, किसी भी तरह का उत्सव हो तो हमारे लिए अलग से प्रोग्राम करते हैं। हमारी दावत करते हैं और ये लोग एक परसेंट भी किसी के धर्म और कर्म के विरुद्ध कोई काम नहीं करते जिससे अगले को ठेस पहुंचे। और अब मैं क्या बताऊं मेवात के बारे में लिखने को मेरे पास कोई शब्द ही नहीं हैं, मेवात तो वैसे ही नाम से बदनाम है वरना मेवात जैसे इंसान, मेवातियों जैसी दोस्ती, मेवात जैसा इलाका शायद ही कहीं मिल पाएगा। हमने मेवात के लिए रातों को सफर किया है। रात को हिसार और भिवानी से जयपुर वाली ट्रेन में बैठते थे सुबह 4:00 बजे अलवर उतरते थे, अलवर से फिर दिल्ली वाली बस में बैठकर फिरोजपुर झिरका नगीना आते और फिर अपनी कर्मभूमि के लिए जाते थे। तो यहां का जो एक्सपीरियंस है वह शायद हमारे लिए बहुत ही आनंदमयी और स्वर्णिम पल रहेंगे अपनी जिंदगी के तजुर्बे में से।

धन्यवाद आपका अपना

अनिल भारती जेबीटी अध्यापक
राजकीय प्राथमिक पाठशाला जरगाली स्कूल कोड 15671
खंड नगीना पिन कोड 122108

मेवात में नहीं चली 'नफरत की दुकान', संघ-भाजपा थैली के चट्टे-बट्टे परेशान

बाहर से आई सांप्रदायिक शक्तियों को मेवात की हिंदू-मुस्लिम सांझी विरासत ने विफल किया

फ़रीदाबाद (मज़दूर मोर्चा) मुग़ल और ब्रिटिश काल से हिंदू-मुस्लिम एकता की मिसाल रहे मेवात में नफरत की दुकान खोलने की संघ और सत्ता समर्थित सांप्रदायिक शक्तियों को वहां की सांझी संस्कृति ने नाकाम कर दिया। धार्मिक यात्रा के नाम पर हजारों की संख्या में सांप्रदायिक तनाव पैदा करने पहुंचे विश्व हिंदू परिषद, गोरक्षक, बजरंग दल आदि गुंडों को स्थानीय हिंदुओं ने नकार दिया। मुसलमान भी अपने हिंदू भाइयों के साथ पहले की तरह ही रह रहे हैं। भाजपा-संघ और उसके चट्टे-बट्टे यानी विहिप, बजरंगदल आदि कथित दल, सेनाओं के पदाधिकारी इस बात से परेशान हैं कि मेवात में रहने वाले हिंदू अभी तक कोई कदम क्यों नहीं उठा रहे, न ही मुसलमान उनके खिलाफ कुछ कर रहे हैं।

पीढ़ियों से साथ रहते आ रहे मेवात के हिंदू-मुसलमानों की अपनी ही सांस्कृतिक पहचान है, यहां के हसन खां मेवाती ने राणा सांगा की ओर से बाबर के खिलाफ युद्ध किया तो 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में राव तुलाराम के झंडे तले हजारों मेव मुसलमान अंग्रेजी सेना से टकराए इनमें साढ़े तीन सौ शहीद हुए। सर छोटू राम और चौधरी यासीन खान ने मिलकर अविभाजित पंजाब के किसानों को अनावश्यक कर से आजादी दिलवाई। पुरखों की यह परंपरा अभी भी नूंह-मेवात में न सिर्फ जिंदा है बल्कि फल-फूल रही है।

सत्ता के लिए देश को सांप्रदायिकता की आग में झोंक कर चुनावी रोटियां सेकने वाली भाजपा 2024 में केंद्र और प्रदेश में होने वाले चुनाव में फिर से सांप्रदायिक कार्ड खेलने की तैयारी कर रही है। मणिपुर में दंगों के बाद वही प्रयोग मेवात में दोहराया गया। संघियों ने इसकी पृष्ठभूमि तीन साल पहले ब्रज मंडल यात्रा शुरू करके की थी। तब संघियों को लगा था कि मुस्लिम बहुल मेवात में इस नई यात्रा का विरोध किया जाएगा लेकिन ऐसा नहीं हुआ। मेवाती मुसलमानों ने यात्रा करने वाले हिंदू भाइयों का स्वागत किया, रास्ते में उनके लिए चाय-पानी और लंगर की सेवा की।

मज़बूत एकता तोड़ने के लिए फिर मोनू मानेसर और बिट्टू बजरंगी जैसे सांप्रदायिक गुंडों को आगे किया गया। दोनों ने भड़काऊ बयान जारी कर माहौल बिगाड़ने का प्रयास किया। इन दंगाइयों के बार बार आह्वान के बावजूद मेवात के हिंदू आगे नहीं आए। करनाल, जींद, नरवाना, हिसार, भिवानी, हिसार, टोहाना, फरीदाबाद आदि जिलों से बजरंग दल, विहिप के हथियार बंद कार्यकर्ता वहां दंगे भड़काने के लिए पहुंचे थे। वहां बुरी तरह पीट कर खदेड़े गए तो अपने सत्ताधारी आक़ाओं की शरण लेकर अब मुसलमानों को सबक़ सिखाने का दबाव बना रहे हैं।

दंगाइयों ने केंद्रीय मंत्री कृष्णपाल गूजर के घर पर प्रदर्शन कर मुसलमानों के खिलाफ योगी की तरह कार्रवाई करने की मांग की। बजरंगियों ने विक्टिम कार्ड खेलते हुए मंदिर में महिला श्रद्धालुओं से छेड़खानी, शारीरिक शोषण तक के आरोप लगाते हुए इलाके का माहौल बिगाड़ने में कोई कसर नहीं छोड़ी लेकिन बजरंगी गुंडों के इस झूठ का खंडन खुद पुलिस अधिकारी ममता सिंह और मंदिर के पुजारी ने किया। ममता सिंह ने बताया कि न तो किसी महिला या बच्ची से अभद्रता हुई और न ही कोई गलत हरकत की गई। मंदिर के पुजारी ने भी बताया था कि किसी ने मंदिर पर हमला नहीं किया।

सत्ता ने भी बजरंगियों का पूरी तरह उनका साथ दिया, धारा 144 लागू होने के बावजूद गुरुग्राम, फरीदाबाद, पलवल आदि जिलों में बजरंगी दंगाइयों ने पुलिस के संरक्षण में मुसलमानों की दुकान, धार्मिक स्थलों में तोड़फोड़ की। गुरुग्राम में हाफिज़ साद की गोली मार कर हत्या कर दी गई। यूपी की तरह मेवात में भी बुलडोजर चलाया गया।

भला हो पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय का कि अन्याय का स्वतः संज्ञान लेते हुए प्रदेश सरकार को कड़ी फटकार लगाई और तुरंत तोड़फोड़ रोकने का आदेश दिया। 75 साल के इतिहास में पहली बार कोर्ट ने राज्य सरकार पर एथेनिक क्लींज़िंग यानी जातीय सफाए की कार्रवाई करने जैसी सख्त टिप्पणी करते हुए सवाल उठाए।

बजरंगी दंगाइयों का समर्थन न तो वहां के जटवाड़ा ने किया न ही अहीरवाल ही आए। इन लोंगों का कहना था कि जब किसान आंदोलन कर रहे थे तब तो हम हिंदू नहीं थे तब हमें आतंकवादी, खालिस्तानी और देशद्रोही बताया गया था। महिला अस्मिता की बात करने वाले उस समय कहां थे जब जंतर मंतर पर धरना दे रही महिला पहलवानों के साथ अभद्रता की जा रही थी। देश के लिए मेडल लाने वाले पहलवान उस समय हिंदू न होकर जाति से पहचाने जा रहे थे। ये मेवात है यहां हिंदू-मेव मुसलमान सदियों से मिल जुल कर रहते आ रहे हैं, बाहरी बजरंगी दंगाइयों को यहां आकर माहौल बिगाड़ने की इजाज़त नहीं मिलेगी।

राव इंद्रजीत जैसे कद्दावर नेता ने मेवात की संस्कृति पर हमले को गलत बताते हुए कड़े सवाल खड़े किए थे। उनका सवाल था कि धार्मिक यात्रा में इतने असलहे कहां से आए? जिस तरह नूंह में दंगाइयों को मेवात की हिंदू मुस्लिम एकता के आगे मुंह की खानी पड़ी, जैसे जैसे जनता जागरुक होगी हर जगह इनकी सच्चाई खुलेगी।

ऐसे तो हाशिए पर चला जाएगा सूचना का अधिकार कानून

राज्य सूचना आयोग द्वारा लगाया गया जुर्माना ही नहीं भर रहे अधिकारी

फ़रीदाबाद (मज़दूर मोर्चा) केंद्र सरकार तो सूचना का अधिकार कानून को कुंद करने के लगातार प्रयास कर ही रही है अधिकारी भी इसे अब गंभीरता से नहीं लेते। राज्य सूचना आयोग से जुर्माना लगाए जाने के बावजूद ये भ्रष्ट अधिकारी न तो आवेदनकर्ता को सूचना उपलब्ध कराते हैं और न ही जुर्माने की रकम भरते हैं। बीते दो वर्ष में राज्य सूचना आयोग ने प्रदेश के 33 विभागों के सूचना नहीं देने वाले अधिकारियों पर 2,65,87,290 रुपये जुर्माना लगाया लेकिन आज तक इसे वसूल नहीं किया जा सका है। अब मुख्य सचिव ने सभी विभाग, बोर्ड, निगम आदि संस्थानों के आला अधिकारियों को संबंधित सूचना अधिकारियों से जुर्माने की रक़म वसूलने के लिए पत्र लिखा है।

राज्य सरकार सूचना का अधिकार क़ानून के प्रति कितनी गंभीर है इसका अंदाज़ा इससे लगाया जा सकता है कि संबंधित अधिकारियों से जुर्माना वसूलने के लिए बनाई गई मॉनिटरिंग कमेटी की इकलौती बैठक 30 सितंबर 2021 को हुई थी। बैठक तो हो गई लेकिन जुर्माने की रक़म वसूलने की कोई कार्रवाई नहीं की गई। मॉनिटरिंग कमेटी की सुस्ती से मनबढ़ हुए अधिकारी जवाब ही नहीं देते। राज्य सूचना आयोग जुर्माना लगाता हो तो अधिकारी यह रक़म जमा ही नहीं करते।

सबसे अधिक मोटी खाल वाले सूचना अधिकारी विकास एवं पंचायत विभाग के निकले। इन पर सूचना आयोग ने 1.108 करोड़ का जुर्माना लगाया लेकिन वसूली नहीं की जा सकी। शहरी स्थानीय निकाय के निकम्मे अधिकारियों पर 65.55 लाख रुपये, शिक्षा विभाग पर 22.68 लाख रुपये, हूडा के सूचना अधिकारियों पर 12.58 लाख रुपये, अर्बन स्टेट विभाग पर 13.33 लाख, राजस्व विभाग पर 13.21 लाख रुपये का जुर्माना बीते दो साल में लगाया गया है। लगभग सभी विभागों के अधिकारियों पर जुर्माना लगाया गया लेकिन वसूली नहीं हुई। शायद यही कारण है कि अब राज्य सूचना आयोग के सदस्य जुर्माना लगाने के बजाय लापरवाह अधिकारी को केवल जुर्माना लगाने की चेतावनी ही जारी कर रहे हैं, क्योंकि उन्हें मालूम है कि वसूली तो होनी नहीं है।

जुर्माने की रक़म की वसूली नहीं होने की रिपोर्ट हाल ही में सूचना आयोग ने राज्यपाल को भेजी। राज्यपाल के आदेश पर कमेटी के सदस्यों की नींद टूटी। अब संबंधित विभागों के मुख्य अधिकारियों को उनके सूचना अधिकारियों पर बक़ाया जुर्माने का पत्र भेज कर जल्द से जल्द राशि वसूलने का आदेश जारी किया गया है। दो साल से सो रहे अधिकारी अब इस आदेश पर कितनी तत्परता से काम करते हैं ये देखने वाली बात होगी।